कुमारों का आह्वान

जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती थी बसेरा,
वह भारत देश है मेरा.....
जहाँ हर बालक एक मोहन था और हर बाला एक राधा,
क्या बचा अभी वो आधा या आधे की भी बाधा...?

जो भरा नहीं है घावों से, बहती जिसमें रसदार नहीं,
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसे मातृभूमि से प्यार नहीं।

जहाँ शेर गाय एक जगह पानी पीते थे, आज वहाँ पर मानव कैसे जीते हैं...! क्या वर्तमान समय अपने भारत का इतिहास पढ़ने के बाद और आज की तस्वीर देखकर आपके मन में कुछ भी नहीं होता? कहाँ गई आपकी शुभ भावनायें, टूटे घरों, उजड़े बसेरों को देखकर आपको कैसे चैन की नींद आती है? रोते-बिलखते बच्चों के हाथों में एक टूटा कटोरा पकड़े देखते हुए मुँह फेर कर निकल जाने के बाद भी आपके मन में कोई करुणा की आवाज नहीं गूँजती? गुब्बारे खेलने की उम्र में, गुब्बारे बेचते बच्चे, हाथ में स्कूल बैग पकड़ने की जगह टाट की बोरी पकड़े, स्कूल जाने की उम्र में दिसम्बर-जनवरी की ठण्ड में भी एक कमीज पहन कर नंगे पैर घूमते हुए प्लास्टिक बीनते बच्चे, जब लोग रजाई में मुँह छिपाकर लेटे हुए होते, उस ठिठुरती सर्दी में वो बच्चे सुबह-सुबह अपने काम के स्थान कूड़ों के ढेर पर ऐसे बैठे होते हैं जैसे मानो सोफे पर बैठे हों। तो क्या कभी आपने अपने देश के ऐसे नौनिहालों की हालत नहीं देखी या देख कर भी आप अपना फर्ज नहीं समझते, कभी सोचा कि ऐसी हालत क्यों हुई? कभी आप ने सड़क पर चलते बीमार पशुओं को देखा है? हमने देखा है, कहो तो एक-दो दर्दनाक दृश्यों से आपको अवगत करायें। कई पशुओं का मुँह ही सड़ गया जिससे उन्हें भूख प्यास लगते हुए भी कुछ खा-पी नहीं सकते, कईयों का पिछला अंग सड़ा हुआ देख जिसका वह कोई इलाज नहीं कर सकते यह सब देखकर कभी आपने सोचा कि आखिर इनको इतनी सजा क्यों, इन्हों को अगर कहें कि अपने विकर्मों की सजा मिल रही है तो इन्हें विकारी बनाने के निमित्त कौन? क्या इन्हें देख कर आपके मन में अभी भी कोई रहम की भावना उत्पन्न नहीं होती? कितने निरपराध लोगों को रोज सजा मिलती है, कितने मौत के घाट उतार दिये जाते हैं, क्या अपराध करने वालों के प्रति आपके मन में करुणा नहीं आती कि आखिर वह इतना पाप बढ़ायेंगे तो उनकी सजा कितनी होगी। क्या बहनों-माताओं के ऊपर अत्याचार की कहानी आपको कभी नहीं सुनाई पड़ती? क्या गरीबों की बेबसी का आप पर कुछ असर नहीं होता? क्या भूख से बिलखते लोगों की हालत पर आपको कभी तरस नहीं आता? भ्रष्टाचार के बढ़ते प्रकोप की लहर कभी आपको सोचने पर मजबूर नहीं करती, प्रकृति के ताँडव नृत्य से विनाश को कभी आपने नहीं देखा? सुरसा के मुँह जैसी बढ़ती महंगाई के बारे में आपने कभी नहीं सोचा? बदलती सरकारों, बदलते नियम कानूनों, बढ़ते धार्मिक उन्मादों से आपके दिल में कुछ भी हलचल नहीं आती? क्या विज्ञान के विनाशकारी रूप से आप बिल्कुल परिचित नहीं है? क्या फुटपाथ पर पड़े अनाथों की लम्बी लाइन देखकर आपका दिल कभी नहीं पिघलता? अरे! आपके गर्म खून में उबाल कब आयेगा? जब समय हाथ से निकल जायेगा तब? इसलिए उठो, छोड़ो झूठी आजादी, बढ़ती आबादी, बेरोजगारी के बारे में कुछ तो सोचो? आखिर कब तक इनसे मुँह फेरते रहोगे, कब तक सोते रहोगे, कब तक अपने फर्ज से हटते रहोगे... आखिर कब तक आपको अपनी जिम्मेवारियों की समझ आयेगी, कब तक आँख बन्द कर बैठे रहोगे। अरे! उठो, और कुछ कर दिखाने के लिए बीमार मानसिकता को दूर भगाओ,

मजबूरियों का लबादा उतार फेंको और टूट पड़ो दुश्मन पर आखिर कब तक चुपचाप हथियार डाल यूँ ही हाथ पर हाथ धरे बैठे रहोगे? मरना भी है तो कुछ करके मरो, मरने के पहले दुश्मन को अवश्य मारो, निकलो बाहर। देखो आसमान की ओर वह जो सबसे छोटा तारा चमक रहा है उसका प्रकाश भले अन्धेरा दूर कर पाये या न कर पाये परन्तु अन्धेरे से भयभीत होकर अपने कर्तव्य को नहीं छोड़ रहा है। देखो उस चींटी की ओर जो अपने से 50 गुना अधिक भार उठा कर चल रही है और अथक होकर निरन्तर अपने कर्म में प्रयासरत है। देखो एडीसन को जिसने बल्ब का आविष्कार 6000 बार असफलता प्राप्त करने के बाद भी कर्म को नहीं छोड़ा और एक दिन सफल रहे। और देखो उस छोटी सी चिन्गारी को जिसने अपने ही दम पर जंगल को जलाकर खाक कर दिया। अरे! तुम क्या नहीं कर सकते! कोई एक छोटा-सा पत्थर कितने भी बड़े तालाब में फेंक कर देख लो उसके फेंकने से उठी लहर तालाब के किनारे वाले पानी को प्रभावित किये बिना नहीं रहती। तो तुम क्या नहीं कर सकते! क्योंकि तुम तो चैतन्य तारे हो, तुम अज्ञान के अंधकार में भटक रहे जग को रोशन क्यों नहीं कर सकते, तुम तो चींटी समान प्राणी से कितने विवेकवान हो, तुम्हारे में अद्म्य शक्ति है, तुम तो पहाड़ को भी अपनी संकल्प शक्ति से हटा सकते हो और तुम चिंगारी नहीं ज्वाला हो और तुम्हारे साथ हजारों सूर्यों से भी प्रचण्ड स्वयं सर्वशक्तिवान भगवान है। इसलिए तुम्हारी कभी असफलता हो ही नहीं सकती क्योंकि तुम्हें सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान है। अंग्रेजों की गुलामी से भारत माँ को आजाद कराने के लिए जब एक राजनेता बापू गांधी ने आह्वान किया तो कितने लोग अपना सबकुछ छोड़ कूद पड़े आजादी के क्षेत्र में बिना आगे पीछे सोचे, कितने अरबपति उनकी एक आवाज पर पद-पोजीशन छोड़कर मलिन बस्ती में उनके साथ सेवा करने को तैयार हो गये, कितने लोग शानो-शौकत का जीवन जीने वाले विदेशी सामान की होली जलाकर अपने हाथ से निर्मित स्वदेशी चीजें अपना कर बड़ा गर्व करते थे, कितनी बहनों ने अपने जेवर उतार कर सर्वस्व गहने गांधी जी के हाथ में लाकर रखे और भगवान तो तुम्हें यह कुछ भी नहीं करने को कहता और ही सफेद फरिश्तों जैसी पोशाक पहनाता है, क्या विश्व कल्याण करने हेतु विश्व पिता का आह्वान स्वीकार नहीं? आखिर कब परिवर्तन शुरू करोगे? एक क्रांतिकारी के कहने पर कितने युवाओं ने हंसते-हंसते फांसी का फंदा चुन लिया और कितनी यातनायें सहीं, पर संगठन व देश के लिए गद्दारी नहीं की।

भगतसिंह को रात-रात भर नींद नहीं आती थी, रोते थे कि कब भारत माँ को गुलामों की बेड़ियों से मुक्त करा पायेंगे, क्या आप अपने पाप खत्म करने के लिए ऐसे सोचते हो? भारत को रावण की जंजीरों से छुड़ाने के लिए आपकी नींद फिटती है? उस 200 वर्ष की गुलामी से मुक्त होने में 90 वर्ष लग गये। जबकि इतने जोशोखरोश से अनेकों ने अपने जान की बाजी लगा दी थी। वो दुश्मन तो बाहर के थे, ये विकारी दुश्मन तो हमारे मन के भीतर तक अपना अधिपत्य जमा चुके हैं। और 2500 वर्षों से डेरा जमाये हुए है, इतनी धीमी गति से स्व को तथा सर्व को कैसे मुक्त करा पाओगे? एक महात्मा के आह्वान पर विवेकानन्द ने अपना सबकुछ छोड़ दर-दर की ठोकरें खाईं, पर वेदों का डंका सारे विश्व में बजाकर रामकृष्ण परमहंस का नाम संसार में अमर कर दिया। तुम्हें तो भगवान आह्वान कर रहा है, साथ दे रहा है और तुम्हारे आस-पास भी, भगवान आ चुका है, यह नहीं प्रत्यक्ष कर पाये? अरे! तुम्हें तो सर्वशक्तिमान का साथ है तो तुम क्या नहीं कर सकते। एक विकलांग बच्चा समुद्र का खारी चैनल पार कर सकता, एक साधारण बहन माउण्ट एवरेस्ट पर चढ़ सकती है और तुम महावीर विघ्न-विनाशक अचल, अडोल अंगद का टाइटिल लेकर भी चुप बैठे हो? एक शिवाजी के कहने पर भारत को आजाद कराने के लिए बन्दा वैरागी, आग की सलाखों से हंसते-हंसते

शरीर छलनी करवा देता है, उसके बच्चे का दिल निकाल कर उसके मुँह में जबरदस्ती ठूंसा जाता है, आँखे निकलवा देता है पर दुश्मनों के आगे घुटने नहीं टेकता, तुम्हें तो कोई सजा नहीं मिलने वाली, भगवान रक्षक सदा साथ है फिर तुम माया के आगे बार-बार क्यों घुटने टेक देते हो? क्यों मरी हुई माया, वह भी कागजी शेर आप को इतना भयभीत कर रही है जो उसके पास जाने वा हाथ लगाने की हिम्मत नहीं करते?

आई.सी.एस. की परीक्षा देने के बाद जब लंदन के एक अधिकारी ने नौकरी के लिए ऑफर किया तो सुभाषचन्द्र बोस ने कहा हम अपने देश की सेवा करेंगे तो उसने कहा कि तुम खाओगे क्या? तो उन्होंने कहा कि मेरा पेट 2 आने से भर जायेगा और दो आने तो हम किसी तरह कमा ही लेंगे तो भला तुम अपना पेट भरने के पीछे इतनी लालसा को क्यों पालकर चल रहे हो? क्या तुम्हें भगवान व उसकी बात पर विश्वास नहीं है, जो अपने वर्तमान-भविष्य के बारे में ही सोच-सोच अपनी सारी शक्तियाँ वेस्ट कर रहे हो? भगवान तो तुम्हारी गैरन्टी लेता है। जबकि एक सिद्धार्थ, एक बीमार व्यक्ति, मुर्दे को देख कर महात्मा बुद्ध बन जाता है और आपके दिल को परिवर्तन करने के लिए और कितने दर्दियों भरे अस्पताल, कितने भूकम्प और सुनामी जैसे प्रकृति के कहर चाहिए? आखिर किस दिन के इन्तजार में हैं किसके इन्तजार में है कि वो आकर परिवर्तन कर देगा?

भगवान का आह्वान, दुनिया की बेबसी, समय की पुकार, प्रकृति की चेतावनी, माया की चुनौती आप को ललकार रही है और तुम क्या सोच रहे हो? छोड़ो मान, अभिमान, धनवान, बेईमान, अपमान, अनुमान के धन्धे...। अरे! उठो, और याद करो अपने स्वमान को जो भगवान ने तुम्हें दिया। भगवान तुम्हें क्या बनाने आया है और तुम कहाँ लगे हो? निकाल फेंको अपने अन्दर से बुजदिली, दिलशिकस्ती की बीमारी, उठो हाथ उठाकर संसार से कह दो, अब दु:ख के दिन बीत चुके, अब स्वर्णिम सुखों की दुनिया हमसे ज्यादा दूर नहीं, कह दो रावण को बांध ले अपना बोरी-बिस्तर अब वह हमसे बच नहीं सकता।

मेरे प्रिय युवा भाइयो, एक छोटी-सी कुल्हाडी से एक युवक किसी बड़े से बड़े पेड़ को धराशायी कर देता है वह ताकत उस कुल्हाड़ी की नहीं, बल्कि युवक की होती है, व्यक्ति एक हथौड़ी से किसी भी बड़ी से बड़ी दीवार को मलियामेट कर सकता है वह ताकत हथौड़ी की नहीं, उसकी होती है जिसने बिना रूके उसे चलाने की हिम्मत रखी, तुम्हारे में भी रावण को ध्वस्त करने की, विकारों के विकराल पेड़ को काटकर गिराने की अथाह शक्ति है। आज सारे संसार की नजरें तुम पर ही टिकी हैं, छोटे और बड़ों दोनों का विश्वास तुम पर ही है।

इसलिए उठो! जागो और जगाओ अपनी सुषुप्त शक्तियों को। मेरे भाइयो तुम शक्ति का अवतार हो, प्यारे के बाबा वरदान हो, ब्राह्मण परिवार का श्रृंगार हो, अरमान हो, हिम्मत का आगाज हो, मेहनत का आवाज हो, उमंग-उत्साह का भण्डार हो, दृढ़ता का पहाड़ हो... इसलिए उठो और कूद पड़ो इस मैदान-ए-जंग के महासमर में, निश्चित विजय तुम्हारी हुई पड़ी है। माया बस, अब मरी पड़ी है, कल्प-कल्प का अनुभव है यह, भगवान तुम्हारा साथ दे रहा है। बस, अब तुम्हें माया से डरना नहीं है, क्रोध के आगे झुकना नहीं, कभी विघ्नों के कारण रूकना नहीं, लोगों के कहने से बहकना नहीं, दिलशिकस्ती से बदलना नहीं, मर्यादा के पथ से भटकना नहीं, तुम्हें बस अब आगे, आगे और आगे बढ़ना ही है, मंजिल को पकड़ना ही है। जग परिवर्तन करना ही है, सबको सन्देश पहुँचाना ही है। तुम्हें सबको सुखी बनाना ही है, प्रभु पिता का यही है सन्देश, यही आदेश, यही है गुरू का उपदेश, हो तुम्हारा यही परिवेश। ओमशान्ति।